www.thearyasamaj.org

वर्ष-१० अंक-१२ २७ अगस्त २०१३

ओ३म्

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रमुख पत्र

वैदिक रवि

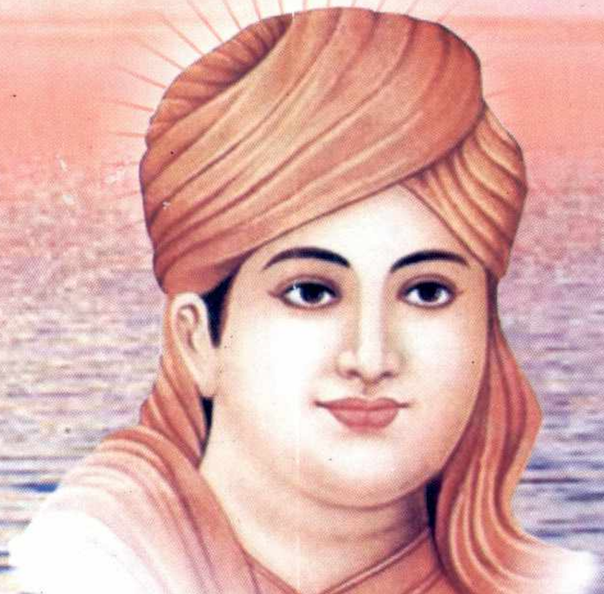

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव ।
यद् भद्रं तन्न आ सुव ॥

www.thearyasamaj.org

अथेश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासनाः

१. ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रं तन्न आ सुव ।।

(यजु. ३०।३)

२. ओ३म हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

(यजु. २५।१०)

३. ओ३म् य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्यछायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।

(यजु. २५ ।१३)

४. ओ३म् यः प्राणतो निमिषतो महित्वैकऽ इद्राजा जगतो बभूव ।
य ईशेऽ अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।

(यजु. ३५ ।१२)

५. ओ३म् येन द्यौरूग्रा पृथिवी च दृढा येन स्व स्तभितं येन नाकः ।
यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।

(यजु. ३२ ।६)

६. ओ३म् प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव ।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ।।

(ऋ सं. १० ।सं. १२१ मं. १०)

७. ओ३म् स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा ।
यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ।

(यजु. ३२।१०)

८. ओ३म् अग्ने नय सुपथा रायेऽअस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भुयिष्ठान्ते नमऽउक्तिम् विधेम ।।

(यजु. ४० ।१६)

www.thearyasamaj.org

ओ३म्

वैदिक-रवि

मासिक

वर्ष-१० अंक-१२

२७ अगस्त २०१३

(सार्वदेशिक धर्मार्थ सभा के निर्णयानुसार)

सृष्टि सम्वत् १९६,०८,५३,११४

विक्रम संवत् २०६९

दयानन्दाब्द १८४

सलाहकार मण्डल

राजेन्द्र व्यास

पं.रामलाल शास्त्री 'विद्या भास्कर'

डॉ. रामलाल प्रजापति

वरिष्ठ पत्रकार

प्रधान सम्पादक

श्री इन्द्रप्रकाश गांधी

कार्या.फोन: ०७५५ ४२२०५४९

सम्पादक

प्रकाश आर्य

फोन: ०७३२४२२६५६६

सह-सपादक

मुकेश कुमार यादव

फोन:९८२६१८३०९५

सदस्यता

एक प्रति- २०-०० रू.

वार्षिक-२००-०० रू.

आजीवन-१०००-०० रू.

विज्ञापन की दरें

आवरण पृष्ठ २ एवं ३	५००० रू.
पूर्ण पृष्ठ (अंदर)	४०००रू
आधा पृष्ठ (अंदर का)	२५०० रू.
चौथाई पृष्ठ	१५०० रु

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	पृष्ठ
१	बदले जमाने में क्या खोया,क्या पाया?	४
२	संसार में दुःख कोई नही चाहता परन्तु विडम्बना है	७
३	अपने को पहचानों	९
४	ज्ञान विज्ञान की खोज और भारतीय विद्वान...	१०
५	सच तो यही है	११
६.	आर्यत्व से ही होगी राष्ट्रवादी हिन्दुत्व की रक्षा	१२
७	धर्म से दूर कौन	१३
८	स्थान विद्वता से बनता है	१४
८	बालकों के लिए विशेष योजना	१५
९	आर्य हमारा नाम	१६
१०	भगवान को क्यों मानें?	१७
११	वैदिक रवि मासिक पत्रिका......	१८
२०	संभागीय सम्मेलन	१९
२१	सभा की ओर से आर्य वीर दल और प्रचार	२०
२२	उच्च न्यायालय खण्ठपीठ ग्वालियर द्वारा ...	२१
२३	7वाँ अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन	२२

सितम्बर माह के पर्व जयंती दिवस

4. देवी अहिल्याबाई होलकर पु.ति
5. शिक्षक दिवस डॉ राधाकृष्णन जयंती
10. भारतेन्दु जयंती
11. संत विनोबा भावे जयंती
13. महर्षि दधीचि जयंती
14. हिन्दी दिवस
15. विश्वश्वैरिया जयंती इंजीनियर डे
25. पं.दीनदयाल उपाध्याय जयंती
27. विश्व पर्यटन दिवस
29. गुरू नानक देव पुण्यतिथि

पत्रिका में प्रकाशित विचार,सामग्री से सम्पादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

किसी भी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा।

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीय –

बदले जमाने में क्या खोया, क्या पाया ?

– प्रकाश आर्य, महू

जमाना बदल गया, बदलता जा रहा है नित नए अनुभव आदमी पा रहा है। वृद्धों में से अधिकांश व्यक्ति कहते सुने जा सकते हैं भाई अब तो पूरा ही जमाना बदल गया है।

बदलाव प्रकिया शाश्वत नियम है, बीज से, पौधा, पौधे से वृक्ष बनकर फिर नष्ट हो जाता है, मानव शिशु से वृद्धावस्था प्राप्त करने के पश्चात देहत्याग देता है। जहां पहाड़ है वहां कभी झील या नदी रही होगी, जहां नदी है वहां कभी ऊँचे–ऊँचे टीले रहे होगें। अनेक शहर आज जमीन के नीचे हैं, पानी के नीचे हैं, अनेक स्थान जो कभी घने जंगल हुआ करते थे वहां आज घनी बस्ती बन चुकी है। ऐसे अनेक उदाहरण हमारे सामने हैं।

परन्तु ये प्रकृति प्रदत्त हैं जो होते ही हैं और होते ही रहेगें। यह सब जीवन में सामान्य घटनाक्रम के रूप में हम देखते हैं इस पर बहुत अधिक न तो हम सोचते हैं, न इसका हम पर कोई विशेष प्रभाव होता है। क्योंकि दिन–रात, जीवन–मृत्यु, सर्दी, गर्मी, बारिश यह कम ऋतुओं के अनुसार शाश्वत है, हमारे नित्य सम्पर्क की घटनाएं हैं।

किन्तु इस बदलाव के अतिरिक्त मानवीय आचार–विचार दिनचर्या में जो बदलाव आया उस बदलाव को देखकर ही कहा जाता है "जमाना बदल गया"। निश्चित रूप से इस बात में सत्यता है, हमारी जीवन शैली परिवर्तित हो गई है और निरन्तर होती जा रही है। परिवर्तन कोई बुरी बात नहीं किन्तु परिवर्तन इस मानव जीवन को किस प्रकार प्रभावित कर रहा है आज यह विचारणीय एवं चिन्ता का विषय है।

आज मानव समाज खूंखार पशुओं से उतना भयभीत नहीं है जितना अपने ही समाज के सदस्यों से है। संस्कृति व संस्कार का त्याग भाव मनुष्य को अवनति की ओर ले जा रहा है।

संस्कृति रक्षा वहीं होगी जहां संस्कार हों, जहां संस्कार नहीं वहां संस्कृति का सोच भी नहीं हो सकता है और जहां संस्कृति नहीं वहां मानवीय अस्तित्व नहीं।

आज के परिप्रेक्ष्य में चारों ओर नजर दौड़ाए और अपनी संस्कृति की ओर देखें स्पष्ट हो जायेगा, हमारे समाज की पूर्व और वर्तमान स्थिति क्या है ?

मानवता की उंचाईयां का कभी मापदण्ड ज्ञान, चरित्र, सेवाभाव, राष्ट्रभाव आदि माने जाते थे। किन्तु शनैः–शनैः इनका लोप होता गया और आज ये किसी समाज के लिए महत्वपूर्ण बातें नहीं रह गई। आज भौतिकता प्रधान युग है, भौतिकवाद की चकाचौंध से प्रभावित सभ्यता मानवता के समस्त मापदण्ड़ों पर भारी हो चुकी है।

पहले राजा व विद्वान की तुलना में विद्वान को बड़ा बताया जाता था कहा गया **"विद्वतं च नृपितं च नैव तुल्य कदाचनः, स्वदेश पूज्यन्ते राजा, विद्वतं सर्वत्र पूज्यन्ते"** राजा और विद्वान का मान–सम्मान अपने राज्य तक सीमित था और विद्वान

www.thearyasamaj.org

का मान सम्मान सर्वत्र होता था। आज के हालात कहां हैं एक अदना सा अधिकारी या राजनेता समाज में पुजाता है और कहीं कोई मन्त्री हो तो फिर सब उसके सामने बौने ही लगते हैं। आज धनवान व्यक्ति सर्वगुण सम्पन्न माने जाने लगा है। बड़े–बड़े शिक्षाविद्, आचार्य, शास्त्री, साहित्यकारों को इस स्वार्थपूर्ति में लिप्त समाज ने, एक कौने में बैठा दिया, उनकी उपेक्षा कर अनदेखा कर दिया और विद्या के धनी विद्वानों के स्थान पर लक्ष्मीपतियों को सर्वोच्च स्थान पर आसीन कर दिया है। क्योंकि – सामाजिक जीवन में अर्थ का बहुत बड़ा अर्थ है, और सबसे बड़ा अनर्थ भी आज इसी अर्थ के कारण होता है।

गौण हुए आज चरित्र, किसका कैसा है।
बड़ा बना वही, जिसके पास पैसा है।।

धनपति को स्थान देना कोई बुरी बात नहीं है, देना ही चाहिए क्योंकि धन भी जीवन की बहुत महत्वपूर्ण आवश्यकता है। किन्तु इसकी चकाचौंध में सबकी उपेक्षा कर इसे ही सर्वोच्चता देना उचित नहीं। धन तो सभी प्रकार के व्यक्तियों के पास पाया जाता है, बुरे से बुरे कार्यों में लिप्त जघन्य अपराधी, स्मगलर, रिश्वतखोर भी बहुत सम्पन्न होते हैं। मात्र सम्पन्नता ही मनुष्य के सम्मान का कारण जहां बन जावे तो समाज में अव्यवस्था होना निश्चित ही है। आज समाज की इस अव्यवस्था का कारण यही नीति है। मनु ने बहुत पहले हमें सचेत किया था।

अपूज्या यत्र पूज्यन्ते पूज्यानाम तू व्यतिकमः।
त्रिणि तत्र प्रवर्तन्ते दुर्भिक्षं मरणं भयम्।।

जहां अपूज्यों की पूजा और पूजनीयों की उपेक्षा हो वहां अभाव, अकाल मृत्यु और भय का वातावरण निर्मित रहता है। अपनी दृष्टि चारों ओर दौड़ाएं देखें मनु के वाक्य में कितनी अधिक सार्थकता है।

केवल अर्थ से सबसे बड़ा अनर्थ है। ज्ञान का उपहास हमें अन्धकार की ओर ले जा रहा है तभी तो इस सर्वोत्तम योनि को पाकर भी केवल भोग योनी (जो पशुओं) की तरह जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

सुख के साधनों का प्रलोभन भोगों की निरन्तर बढ़ती इच्छा शक्ति ने मानव जीवन के पथ से मनुष्य को मोड़ दिया है। धन, वैभव, सम्पत्ति की चाह से जीवन उद्देश्य इसी के आसपास सिमिटा दिया। रिश्ते नकली कागजी फूलों की तरह मात्र देखने, दिखाने तक सीमित हो गए। अपने से हटकर कुछ सोचने की न तो अब आवश्यकता समझी जाती है न किसी के पांस समय है। आवश्यकताओं के जाल में उलझा आदमी उससे बाहर नहीं निकल पाता है। इस प्रवृत्ति के सामाजिक संगठन की, और आपसी सहयोग की भावना को रौन्द डाला, **स्वार्थ, स्वार्थ, स्वार्थ** जीवन का पहाड़ा बन गया, जिसने इसे समझ लिया, अपना लिया, वह संसार की निगाह में समझदार और जिसने इसे महत्व नहीं दिया उसे न समझ की उपमा दी जाती है।

साधन, सम्पन्नता, भौतिकता की दौड़ में मनुष्यता के सारे मापदण्ड बहुत पीछे रह गए, जिन्हें हम स्वर्ण अतीत कहते थे वह अव किताबों तक सीमित रह गया। उस छूटी हुई दकियानूसी विचारधारा की ओर न तो देखना चाहते हैं न देखने का समय है क्योंकि उधर ध्यान गया तो आगे लक्ष्य की ओर बढ़ने में शायद पिछड़

www.thearyasamaj.org

जावे। हमारी स्थिति एक नादान बच्चे जैसी है जिसके सामने एक टाफी, बिस्किट या छोटा सा खिलौना हो और दूसरे हाथ में एक हजार का नोट। तो वह नोट फेंक कर चॉकलेट, टाफी रखना पसंद करेगा। इसी प्रकार हम कुछ थोड़े से सुख के लिए, आनन्द को अपने से दूर कर रहे हैं जीने के सही तरीके से विमुख हो रहे हैं।

भौतिक प्रधानता के साथ पाश्चात्य सभ्यता का बढ़ता प्रभाव हमारे संस्कारों की जड़ों में मट्ठा डाल रहा है। मॉ संसार का सबसे प्रिय आत्मीय और शान्ति प्रदान करने वाला ममता, वात्सल्य, भावना और भाव, प्रेम से भरा संबोधन है, उसका स्थान मम्मी–मम ने ले लिया। उसी प्रकार काका, चाचा, मामा का स्थान अंकल, मौसी, भुआ, काकी, मामी का स्थान आन्टी जैसे संबोधनों ने लेकर रिश्तों की गरिमा को बौना कर दिया।

गरिमापूर्ण, नम्रता से पूर्ण अभिवादन चरण स्पर्श, नमस्ते का स्थान हाय हलो, गुडबॉय, सी. यू. ने। खान–पान पहनावे में भी सब वह समा रहा है जो विदेशी संस्कृति के द्वारा मान्य किया गया है।

हमारे स्वर्णिम सिद्धान्त : "**धन खोया तो, कुछ नहीं खोया,**
स्वास्थ्य खोया तो कुछ खोया,
चरित्र खोया तो सबकुछ खोया।

आज इसके ठीक विपरीत स्थिति समाज में मान्य होती जा रही है। इसी का परिणाम है सामाजिक कलंक, भ्रष्टाचार, व्यभिचार, शोषण, घूस सामान्य सी बात बनकर रह गया।

कुल मिलाकर जीवन का जोड़–घटाव किया जावे, हिसाब किया जावे तो पायेगें –

हमें आदमी भले ही कहो, पर आदमियत से दूर हैं,
छोड़ चुके वो सब, जिनसे कौम मशहूर है।
आज वक्त बदल गया, आदमी भौतिकता में ढ़ल गया,
यही जीवन की बंनी पहचान, इसीलिए जी रहा इन्सान।
खो रहे अतीत गौरव, संस्कार, संस्कृति से हुये दूर,,
लुटा दिए अनमोल रतन, खोटे सिक्कों से है भरपूर।

समाज जिन आदर्शों को लेकर बना, जिनसे जीवन की सार्थकता थी, जो जीने की सही पद्धति थी उन्हें हमने खो दिया और बाहरी शरीर को सजाने, भौतिक सुख के साधन जुटाने में जीवन लगा दिया। जिससे क्षणिक सुख, आत्म संतुष्टि तो मिल जावेगी किन्तु अन्त में पश्चाताप और ग्लानि ही रहेगी। तब पिश्चाताप होगा – "क्या खोया, क्या पाया ?"

इसीलिए प्रदीप जी की पंक्तियॉ बड़ी सही हैं –

देख तेरे संसार की हालत क्या हो गई भगवान,
कितना बदल गया इन्सान.....।

www.thearyasamaj.org

गतांक से आगे..........

संसार में दुःख कोई नहीं चाहता परन्तु विडम्बना है सुख का मार्ग भी अपनाना नहीं चाहता।

- प्रकाश आर्य, महू

अज्ञान मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है। इस कारण अज्ञान हमें सत्यता और उसके परिणामों से दूर रखता है। भ्रमित कर देता है। परिणाम स्वरूप जो हमें जीवन के लिए सुखदायक हो सकते हैं, उनसे दूरी और जो दुःख के कारण होते हैं उनके प्रति लगाव उत्पन्न हो जाता हैं। इसलिए उपनिषद के ध्येय वाक्य **"तमसो मा ज्योर्तिगमय"** का घोष बार-बार करते हैं। यह अज्ञान रूपी अन्धेरे से ज्ञान रूपी प्रकाश की ओर जाने की प्रार्थना है।

परमात्मा ने संसार का निर्माण सबके सुख के लिए और स्वर्ग सा आनन्द प्राप्त करने के लिए किया है । जिसका लाभ, ज्ञान से प्राप्त किया जा सकता है । ज्ञान से दूरी और अन्धकारमय जीवन हमें उन बहुत कुछ वस्तुओं, विचारों से दूर करते हैं जो हमारे जीवन के लिए लाभदायक, महत्वपूर्ण और सुख देने वाले हैं। परमात्मा द्वारा प्रदान की गई इस समस्त सृष्टि सुख, सम्पदा का उपयोग समस्त प्राणियों के लिए है। इनमें से कुछ भी परमात्मा के अपने लिए नहीं है। हम वास्तव में पूर्ण सुख को भी पूरी तरह नहीं जान पाए, वह क्या है ? पूर्ण सुख को दो प्रकार से मानना चाहिए, **शारीरिक व आत्मिक।**

शारीरिक सुख साधनों और सुविधाओं से प्राप्त होते हैं और आत्मिक सुख आन्तरिक व ज्ञानमय कल्याणकारी विचारों और सद् व्यवहार व साधना से होता है।

यहां यह भी ध्यान रहे, अकेले शरीर को किसी सुख या दुःख का प्रभाव नहीं जान पड़ता है। शारीरिक सुख व दुःख की अनुभूति भी आत्मा को ही होती है। जिसका माध्यम शरीर होता है।

आत्मा का शरीर से अलग होना शरीर के महत्व को समाप्त कर देता है। शरीर शव बन जाता है। उसकी चेतन्यता समाप्त होकर जड़ बन जाती है। आत्मा के न रहने पर मृत शरीर को कितनी भी क्षति पहुंचावें उसके कितने ही टुकड़े कर दें, कितने ही दिनों तक भोजन, पानी न देवें शरीर को कोई पीड़ा नहीं होगी, क्यों जिससे पीड़ा की अनुभूति होनी थी, वह तो इसमें है ही नहीं ।

www.thearyasamaj.org

इसीलिए जीवन के दो तत्वों में शरीर से अधिक महत्व आत्मा का है। पहला तत्व तो उसका कवच ढ़ांचा या वाहन मात्र है। आत्मा स्वामी, शरीर सेवक है।

आत्मिक सुख शारीरिक सुख से बड़ा अधिक महत्वपूर्ण और स्थायी है। आत्मिक सुख के लिए बाहरी प्रयत्नों से साधनों को एकत्रित करने की आवश्यकता नहीं होती।

अज्ञानतावश हम आज शरीर को ही सबकुछ मानकर उसको ही जीवन में अधिकाधिक महत्व दे रहे हैं। इसी कारण धन सम्पत्ति, परिवार, जमीन, जायदाद, खान पान आदि को ही मानव जीवन का सर्वोच्च्य लक्ष्य मानकर जी रहे हैं। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए ही बहुत प्रकार के उचित-अनुचित मार्गों से धन प्राप्त करने में लगे हैं।

इसी संदर्भ में उपनिषद में एक कहानी आती है ऋषि याज्ञयवल्क की दो पत्नियां थी,ऋषि को सन्यास लेने की इच्छा हुई इसलिए अपनी दोनों पत्नियों को बुलाया और अपनी सन्यास लेने की भावना से अवगत करवाया। उनके पास जो सम्पत्ती थी उसे दोनों में बाँटनें का निश्चय कर उन्हें सम्पत्ती देना चाही।

इस पर कात्यायनी ने जो सम्पती उसे दी वह प्राप्त कर ली। किन्तु मैत्रयी ने लेने से मना किया और ऋषि से प्रश्न किया कि क्या यह सम्पत्ती प्राप्त करने पर संसार में मानवीय लक्ष्य उस आनन्द को प्राप्त कर सकूंगी ?

ऋषि का उत्तर था नहीं यह धन सम्पत्ती उन सबके लिए पर्याप्त नहीं यह तो शारिरिक भरण पोषण व्यवस्था तक सीमित है।

इस पर मैत्रयी ने कहा, जीवन उन्नति का जो पथ है ज्ञानमय जीवन है वह में जीना चाहती हूँ इस नाशवान धन को लेकर क्या करूँगी। इसीलिए कहा गया-

गोधन गजधन वाजिधन और रतन धन खान।
जब आवे सन्तोष धन सब धन धूरी समान है।

सुख-आनन्द-सन्तोष यह एक ही प्रकार का अर्थ दर्शाते है किन्तु सुख केवल शारीरिक इच्छाओं की पूर्ति तक सीमित है।

आनन्द और सन्तोष अर्न्तमुखी आन्तरिक है। योग दर्शन में उसी सुख को श्रेष्ठ माना है। जो सन्तोष के साथ हो। कहा गया **"संतोषादनुत्तम सुख लाभः"** संतोष के साथ जो सुख मिलता है, वह अधिक लाभदायक और सुखकारी होता है।

अज्ञानता के कारण हम जीवन के इस सन्तोष रूपी अमृत को समझ ही नहीं पाए और बाहरी सुख सुविधाओं तक ही सीमित रह गए। उसमें लिप्त होने से, उसके साधनों को जुटाने में ही दुःखी हैं। शारीरिक सुख-दुःख के साथ जुड़ा है, शारीरिक सुख नाशवान है, किन्तु आत्मिक सुख का अन्त नहीं होता और वह दुःख का कारण कभी नहीं होता।

क्रमशः.......

www.thearyasamaj.org

बोध कथा –

अपने को पहचानों

एक शेरनी जिसका बच्चा पैदा होने वाला था, एक बार अपने शिकार की खोज में बाहर निकली। उसने दूर चरते हुए एक भेड़ों के झुण्ड पर ज्यों ही छलांग मारी, त्यों ही उसके प्राण पखेरू उड़ गए और एक मातृहीन शिशु ने जन्म लिया। भेड़ें उस सिंह के बच्चे की देखभाल करने लगीं और वह उन्हीं के साथ रहने के कारण वैसे ही घास पात खाकर मिमियाने लगा। कुछ साल बाद एक बलवान शेर बनकर भी वह अपने को भेड़ समझता रहा कुछ दिन बीते कि एक दिन एक बड़ा शेर शिकार के लिए उधर आ निकला। उसे यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि भेड़ों के बीच में एक शेर भी है, जो उन्हीं की तरह भागा जा रहा है। बड़ा शेर उसे समझने के लिए ज्यों ही आगे बढ़ा कि भेड़ों का झुंड और भी भागा और उसके साथ वह भेड़ सिंह भी। किन्तु बड़े शेर ने भेड़ को अपना असली रूप समझाने का प्रयास नहीं छोड़ा। एक दिन देखा कि वह एक जगह पड़ा सो रहा है। बड़ा शेर छलांग मारकर उसके पास पहुंचा और समझाने लगा, "अरे तू भेड़ों के साथ रहकर अपना स्वभाव कैसे भूल गया। तू भेड़ नहीं, तू तो शेर है। भेड़ सिंह बोला – क्या कह रहे हो ? मैं तो भेड़ हूं शेर कैसे हो सकता हूँ ? वह भेड़ों की तरह मैं–मैं करने लगा। बड़ा शेर उसे उठाकर एक तालाब के पास ले गया और बोला – यह देख अपनी परछाईं। तब भेड़ सिंह दोनों की तुलना करने लगा। उसे क्षण भर में मालूम हो गया, सचमुच मैं तो शेर हूँ। तब वह शेर के समान गरजने लगा और उसका मिमियाना न जाने कहां चला गया।

हे मानव ! इसी प्रकार तुम असल में सिंह हो, शुद्ध, पवित्र आत्मा हो। संसार की बड़ी शक्तियां तुम्हारे भीतर हैं। तुम जन्म और मौत से परे हो। पर शरीर को ही आत्मा समझकर रोते हो, दुःख उठाते हो। एक बार साहस से सब कायरता छोड़कर उठ खड़े होवो और कहो – मैं आत्मा हूँ, शुद्ध, पवित्र आत्मा हूँ, मैं अमर हूँ। मौत मेरा बाल भी बांका नहीं कर सकती। फिर देखो, कि तुम कितनी जल्दी उन्नति करते हो। इस भाव से अपने को जानो और मानव की महानता को पहचानों।

www.thearyasamaj.org

ज्ञान विज्ञान की खोज और भारतीय विद्वान

भास्कराचार्य का जन्म वि. सं. 1114 में हुआ था। कुछ लोग आपका जन्मस्थान कर्नाटक का बीजापुर मानते हैं तथा कुछ लोग बिज्जडित नामक ग्राम जो वर्तमान में महाराष्ट्र का जलगांव नामक जिला है मानते हैं। भास्कराचार्य के पिता का नाम महेश्वर था। वे गणित के प्रकांड पंडित थे।

गुरूत्वाकर्षण के सिद्धान्त का सार यह है कि पृथ्वी अपनी आकर्षण शक्ति के कारण प्रत्येक वस्तु को अपनी ओर खींचती है। किन्तु जानकारी न होने से इस सिद्धान्त को खोजने का श्रेय आधुनिक वैज्ञानिक न्यूटन को दिया जाता है। न्यूटन ने इस सिद्धान्त का प्रतिपादन सन् 1668 में किया था। परन्तु भास्कराचार्य ने उनसे भी 500 वर्ष पूर्व इस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है।

भास्कराचार्य की ख्याति एक्र महान गणितज्ञ और खगोल वैज्ञानिक के रूप में हुई थी। आपका मुख्य ग्रंथ "लीलावती" गणित के क्षेत्र में एक महान सिद्धि मानी जाती है। लीलावती आपकी पुत्री का नाम था, जिसे आप अत्यधिक चाहते थे। इसलिए आपने इस ग्रंथ को अपनी पुत्री का नाम दिया है। लीलावती छन्दों में लिखित पद्यात्मक ग्रंथ है। पद्य में अनुकूलता होती है। इस ग्रंथ की लोकप्रियता एवं उसके महत्व का अनुमान इस बात से हो सकता है कि अनेक विदेशी भाषाओं में इसका अनुवाद हो चुका है। लीलावती में भास्कराचार्य ने दश गुणोत्तर प्रणाली का प्रयोग किया है। उसमें गणित की सामान्य विधियों को मनोरंजक रूप में समझाया गया है। जोड़, घटाना, गुणा, भाग, वर्गमूल आदि के अलावा इस ग्रंथ में अनेक उपयोगी प्रश्नों का भी समाधान किया गया है।

आपके लिखे हुए दो ग्रंथ विशेष प्रसिद्ध हुए। प्रथम है "सिद्धान्त शिरोमणि" तथा द्वितीय है "सूर्यसिद्धान्त" सिद्धान्त शिरोमणि चार विभाग 1. लीलावती 2. बीजगणित 3. गणिताध्याय 4. गोलाध्याय नाम से जाने जाते हैं।

भास्कराचार्य गणितज्ञ होने के साथ–साथ एक महान ज्योतिषी भी थे। हम जानते हैं कि उनके समय में दूरबीन की खोज नहीं हुई थी। पुनरपि ग्रह, नक्षत्रों आदि का अध्ययन, उनकी स्थिति का परिज्ञान उन्होंने कैसे किया होगा, यह आश्चर्य का विषय है। तारामण्डल के अभ्यास में आप भोजन या विश्राम को भी भूल जाते थे।

भास्कराचार्य एक महान खगोलशास्त्री भी थे। खगोल विज्ञान के क्षेत्र में आपका प्रसिद्ध ग्रंथ "कर्म कुतूहल" है। इस ग्रंथ में ज्योतिष संबंधी सारणियों और गिनतियों में किए हुए कार्यों का वर्णन है। गणित और ज्योतिष के क्षेत्र में नवीन शोध करने का कठिन कार्य भास्कराचार्य ने करते हुए ऐसे महत्वपूर्ण ग्रंथों की रचना की जो बाद में विश्व प्रसिद्ध हुए।

www.thearyasamaj.org

सच तो यही है

शूलों से क्या गिला, फूलों में तकरार है।
रात की बात क्या, सुबह ही बीमार है।।
बेसुरी हो गई बांसुरी श्याम की।
अब यह महफिल नहीं है मेरे काम की।।
चिन्तकों की चितायें जलाने लगे।
असली चेहरे को अपने छिपाने लगे।।
मन के सूखे हैं लोग, तन के भूखे हैं लोग।
कद्र होने लगी है फक्त चाम की।। अब यह महफिल...........
ख्वाहिशें पाली थी जो भी मधुमास की।
चोरनी ले गई, माला विश्वास की।।
डालकर झोली में, बैठकर डोली में।
वो दुल्हन बन गई, किसी ग्राम की। अब यह महफिल.........
खोज लेते अगर, होती कहीं पास में।
नैतिकता तो भटकती है वनवास में।।
लाज बन्दी हुई, शर्म नंगी हुई।
वाह–वाह होने लगी है बदनाम की।। अब यह महफिल.........
सपनों के झूलों में हम झूले भी क्यों।
हम अन्धेरों में उनको झूले भी क्यों।।
कौन साथी यहां, कौन घाती यहां।
किसको इन्तजार है अपने इन्तकाम की।। अब यह महफिल.........
जिनका दावा था स्वर्ग भू पर लायेगें हम।
सारे संसार को श्रेष्ठ बनायेगें हम।।
बात जो भी कहीं, सब हवा हो गई।
ढपली पीटो चाहे अब किसी नाम।। अब यह महफिल.........
घर की ईंटें ही घर से झगड़ने लगीं।
देखकर के पड़ोसन थिरकने लगीं।।
छत रहे या गिरे, कोई जिये या मरें।
किसको चिन्ता "**सुरेन्द्र**" परिणाम की।। अब यह महफिल.........

– पं. सुरेन्द्र पाल आर्य
गीतकार, वैदिक प्रवक्ता

www.thearyasamaj.org

आर्यत्व से ही होगी राष्ट्रवादी हिन्दुत्व की रक्षा

विगत दिनों गुजरात के मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी का यह बयान काफी चर्चित रहा, जिसमें उन्होंने अपने आपको राष्ट्रवादी हिन्दु कहकर गौरव का अनुभव किया। किंतु भाजपा और उसके अनुशांगिक संगठन हिन्दुत्व की रक्षा के लिए कोई कारगर कार्ययोजना आज तक नहीं बना सके हैं। समग्र विवेचना करने पर बुद्धिजीवि इस बात पर सहमत हैं कि हिन्दुत्व की रक्षा केवल आर्य समाज के आंगन में हो रही है। वहीं राजनीति के गलियारे में हिन्दू शब्द का उपयोग मात्र बहुसंख्यक हिन्दु समाज के प्रति अपनी संवेदनायें प्रदर्शित करना है।

राजनीति के क्षेत्र में जब भारतीय जनसंघ की स्थापना हुई, उस समय तीन धारायें मिलकर हिन्दुत्व की रक्षा के लिए आगे आंई थीं, जिनमें आर्यसमाज, हिन्दु महासभा, और आर.एस.एस के सेवा धर्मी लोग शामिल थे। कालान्तर में उससे हिन्दु महासभाई अलग हो गए, आर्य समाज के त्यागी तपस्वी, जन भी राजनैतिक महत्वाकांक्षा की दौड में अधिक नहीं चल सके। और अकेला भारतीय जन संघ धीरे से जनता पार्टी में बदल गया, जो अब भाजपा बन गई है। हिन्दुत्व के बार बार उठाएं जा रहे मुद्दे को भाजपा पकडती और विसराती रही है। असल में हिन्दुत्व कैसे जीवित रहेगा, यह राजनैतिक पार्टियाँ तय नहीं कर सकतीं। राष्ट्रवादी स्वयं सेवक संघ भी हिन्दुत्व की बात कहते कहते थक गया, किंतु वह भी हिन्दुत्व की जीवनशैली सिखाने में लगातार असफल होता चला जा रहा है। क्योंकि हिन्दुत्व की बात करने बाले संगठनों के संचालक ही हिन्दुत्व पर नहीं चल पा रहे हैं। उन्हें यह भी पता नहीं है कि असल हिन्दुत्व क्या है, मूर्तिपूजा के झमेले में पडा हिन्दु समाज अपने आराध्य महापुरूषों की मूर्ति पूजा करते करते अब कब्रों, पर अगरबत्तियां लगाने, और नेताओं के राजनैतिक नाटक के चलते मजारों पर चादरें चढ़ाने लगा है। जबकि इस्लाम को मानने बाले भी बुत और मजार की पूजा करने के खिलाफ हैं। शाकाहार की जीवन शैली से भी हिन्दु समाज हटता जा रहा है। जिस हिन्दुत्व की बात राजनेता कर रहे हैं, उसको वह स्वयं आचरण और व्यवहार में अपनायेंगें, तभी हिन्दुत्व के प्रतिबिंब बन सकेंगें। असल हिन्दुत्व को बचाने के लिए उन्हें ईश्वर, जीव और प्रकृति का ज्ञान कराना आवश्यक होगा, ईश्वर चेतन स्वरूप है, वह प्रकृति के पंचतत्व अग्नि, जल, वायु, पृथ्वी और आकाश में विद्यमान है, किंतु उसके सच्चिदानंद अर्थात सत्य, चेतन, और आनंद के भण्डार को प्रकृति की पूजा से पाना सम्भव नहीं है, मूर्ति ईश्वर नहीं, मूर्ति में ईश्वर है, हमारे आराध्य देवों की मूर्ति पूजा से हमें सद्ज्ञान और सद्प्रेरणायें मिलतीं हैं, यह परिभाषा कहते कहते, हमारे हिन्दु भाई अब कब्रों में दफन मुर्दो की पूजा करना भी अपना धर्म समझने लगे, इन्हें कैसे रोकेंगें, यदि नहीं रूके तो हिन्दुत्व कैसे बचेगा, यह मौलिक प्रश्न जब यहां गंजबासौदा में एक कार्यक्रम में पहुंचे आरएसएस अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के लिए समर्पित पूर्णकालिक व्यक्तित्व श्री केलकरजी के समक्ष चर्चा में आया, तो वरिष्ठ पत्रकार अनिल यादव के समक्ष वह भी अनायास ही कह उठे असल हिन्दुत्व को अब आर्यत्व ही बचा सकता है। आर्यत्व ही भारत में राष्ट्रवादी विचारधारा को पोषित करता रहा है। भारतवर्ष को गुलामी की जंजीरों से मुक्त कराने हजारों आर्यवीरों ने हंसते हंसते अपने प्राण न्यौछावर किए हैं, और देश धर्म की रक्षा के लिए आर्य समाज की विचारधारा ही हिन्दुत्व को बचा पायेगी।

लेखक– **ओमप्रकाश आर्य एडवोकेट कुरवई**

www.thearyasamaj.org

धर्म से दूर कौन ?

धर्म मानव जीवन को अलंकृत करने वाला एक अनमोल गहना है, जिसको धारण करके मानव जीवन की सुन्दरता बढ़ जाती है और इस धर्म रूपी गहनें के त्याग से जीवन कुरूप हो जाता है।

यहां एक बात और ध्यान देने योग्य है, धार्मिक दिखना और धार्मिक होना इन दोनों में बड़ा अन्तर है। प्रायः समाज का बहुत बड़ा भाग धार्मिक दिखता है, परन्तु वास्तव में धार्मिक है नहीं। यदि वास्तव में समाज का बड़ा भाग धार्मिक हो जाये तो वर्तमान कष्टदायक स्थिति से समाज मुक्ति पा जाये। क्योंकि धर्म तो सुख शान्ति समृद्धि और संगठन का देने वाला है। किन्तु आज विपरीत स्थिति क्यों है ? इसका मुख्य कारण ही यह है कि समाज के जीवन में धर्म का आडम्बर ज्यादा है और व्यवहार कम है। धर्म का पालना और मानना धर्म के बाहरी दिखावे को महत्व देकर हो रहा है। कपड़े, दाड़ी, तिलक, कण्ठी, नंगे पैर चलना, धार्मिक चित्रों से मकान, दुकान सजाना, ये बाहरी लक्षण को ही धर्म मान लिया है। इसलिए धर्म के अनुसार आचरण गौण हो गया है।

धर्म से मनुष्य दूर क्यों रहता है, इसका कारण महात्मा विदुर जी ने धृतराष्ट्र को दुर्योधन के व्यवहार से व्यथित होकर बताया। उनके अनुसार 10 कारणों (आदतों) से मनुष्य धर्म से दूर रहता है। ये है –

मत्तः, प्रमत्तोन्मत्तः कुद्धो श्रान्तः बुभुक्षितः,
त्वरमाणश्च लुब्धश्च भीतः कामी च ते दश,
ये ते धर्मं न जानन्ति, धृतराष्ट्र निबोधतान्।

अर्थात – नशेड़ी, पागल, उन्मुक्त, कोधी, थका हुआ, भूखा, जल्दबाज, लोभी, डरा हुआ और भोग विलास में ही जीवन व्यतीत करने वाला व्यक्ति इन दुर्गुणों के रहते धार्मिक नहीं हो सकता।

निश्चित ही उपरोक्त मानवीय दोष धर्म से विमुख करने का एक प्रमुख कारण है, प्रकाश और अन्धेरा एक साथ नहीं रह सकते, उसी प्रकार उपरोक्त आदतों से ग्रस्त व्यक्ति धार्मिक नहीं हो सकता। क्योंकि धर्म की मान्यता उपरोक्त बताये 10 लक्षणों के विपरीत है।

नीति कहती है इसलिए धर्म जिज्ञासू उपरोक्त 10 बातों का परित्याग करके धर्म को आत्मसात करें।

– प्रकाश आर्य, महू

www.thearyasamaj.org

स्वामी दयानन्द –

स्थान विद्वता से बनता है

एक दिन, एक पण्डित मन्दिर के चबूतरे के ऊँचे स्थान पर बैठकर स्वामी जी से शास्त्रार्थ करने लगा। लोगों ने उसके ऊँचे स्थान पर बैठने को बुरा समझा। कई भद्र पुरूषों ने उसे समझाया कि सभ्य पुरूषों की तरह बैठकर वार्तालाप करो, परन्तु वह ऐसा हटीला था कि वहीं डटा रहा। महाराज ने उस समय लोगों से कहा कि कोई हानि नहीं, पण्डितजी वहीं बैठे रहें। केवल ऊँचे आसन से किसी को महत्व प्राप्त नहीं होता। यदि ऊँचे आसन बड़ाई का कारण हो तो पण्डितजी से भी ऊँचा वृक्ष पर वह कव्वा बैठा है।

दो दुष्टों की दुर्गति

एक दिन जब स्वामीजी मथुरा में व्याख्यान दे रहे थे तो कुछ धूर्तों ने एक कलाल (शराब विक्रेता) और एक कसाई को भेजा और उन्होंने वहां शोरगुल मचाकर स्वामीजी से कहा कि हमारे शराब और मॉस के दाम तो दे दीजिये। स्वामी ने हंसकर कहा "बहुत अच्छा, व्याख्यान के बाद तुम्हारा हिसाब भी कर देगें।" व्याख्यान के पश्चात स्वामीजी ने अपने दोनों हाथों से दोनों के सिर पकड़कर कहा कि तुम्हारे कितने–कितने दाम है। जब उन्होंने देखा कि स्वामी जी उनके सिरों को आपस में टकरा कर कचूमर निकाल देगें, तो उन्होंने हाथ जोड़कर क्षमा मांगी और कहा कि हमें तो अमुक पुरूषों ने बहकाकर भेजा है। स्वामीजी ने उनको तुरन्त क्षमा कर दिया और छोड़ दिया। यह स्वामीजी की दिव्य दया का दिव्य दर्शन था।

स्वास्थ्य के लिए थोड़ा हंसिए भी

0 संता (बंता से) : तुमने सुना, मिसेज शर्मा की जुबान कल अचानक बन्द हो गई।

बंता : मैं अभी अपनी पत्नि को उन्हें देखने के लिए भेजता हूँ।

संता : क्या वे उनकी सहेली या रिश्तेदार हैं।

बंता : नहीं, लेकिन सोचता हूँ। यदि यह छूत की बीमारी निकली तो मेरी आजादी का दिन नजदीक हैं।

---

0 संता : क्यों मित्र, तुम्हारे दांत कैसे टूट गए ?

बंता : हंसने के कारण।

संता : हंसने के कारण ?

बंता : हॉ यार, कल मैं एक पहलवान को देखकर हंस पड़ा था।

www.thearyasamaj.org

बाल सन्देश स्तंभ

बालकों के लिए विशेष योजना

प्यारे बच्चों,

सबको बहुत–बहुत प्यार भरा नमस्ते ! आशीर्वाद....

बच्चों इस माह से पत्रिका में आपके ज्ञानवर्धन के लिए कुछ बातों को प्रकाशित किया जायेगा। इसे ध्यान से पढ़ें ताकि आपके ज्ञान में तो वृद्धि होगी ही एक और लाभ होगा, आपको पारितोषिक भी मिलेगा। इस प्रतियोगिता में 10 से 18 वर्ष तक के बालक–बालिकाएं भाग ले सकते हैं।

इसके लिए आपको इस पुस्तिकाओं को संभालकर रखना होगा। माह फरवरी में आपको जो पत्रिका मिलेगी उसमें आपसे कुछ प्रश्न पूछे जावेगें, उनके सही उत्तर आपको इन्हीं पुस्तिका में से ढूंढ़ कर देना है।

सही उत्तर प्राप्त होने पर उनका ड्रॉ निकाला जावेगा। जिसमें आने वाले नामों को पारितोषिक प्रदान किए जायेगें। 20 चयनित छात्र/छात्राओं को हर छः माह में इस प्रकार ईनाम प्रदान किए जायेगें।

इसे कहते है आम के आम और गुठलियों के दाम – ज्ञान भी और ईनाम भी।

बच्चों, आप अपनी ओर से भी कोई रचना, लतीफा, कहानी भेज सकते हैं जो ज्ञानवर्द्धक हों, अच्छी होने पर प्रकाशित की जावेगी। स्वरचित कविता, कहानी के साथ आप अपने फोटो भी भेज सकते हैं ताकि समय–समय पर उनको प्रकाशित किया जायेगा। तो फिर तैयार हो जाईए, **ज्ञान और ईनाम पाईए।** बच्चों आप मुझे पत्र पर बाल सन्देश लिखकर इस पते पर पत्र व्यवहार कर सकते हैं।

उपयोगी सीख :

1. **Do not be greedy.** लालच मत करो।
2. **Do not be lessey.** आलस्य मत करो।
3. **God is every where.** परमात्मा हर जगह व्याप्त है।
4. **God is one.** परमात्मा एक है।
5. **Always remember goal.** अपने उद्‌देश्य को हमेशा ध्यान रखो।

तुम्हारी
नीलू दीदी
आर्य समाज, महू (म. प्र.)
दूरभाष 07324–226767,
273201

www.thearyasamaj.org

बाल सन्देश स्तंभ

आर्य हमारा नाम

हम आर्य हैं। आर्य हमारा सबसे अच्छा नाम है। आर्य कहते हैं, श्रेष्ठ मनुष्य को। आर्य वह है, जो अच्छे कर्म करे। किसी को हानि न पहुँचाए। सबकी भलाई करे। सदाचार का पालन करे। माता, पिता और गुरू का आदर करे। उनकी आज्ञा माने, सेवा करे। एक ईश्वर को माने। वेदों के अनुसार चले। देश–जाति की सेवा करे।

जैसे किसी व्यक्ति को दयालु, धर्मात्मा, श्रीमान, बलवान, धनवान कहते हैं यह उस व्यक्ति के गुण, कर्म, स्वभाव के कारण उसे पुकारते हैं। इसी प्रकार जो व्यक्ति श्रेष्ठ कर्म करता है वह आर्य है, यह उसके गुण, कर्म के कारण नाम पुकारा जाता है, सनातन धर्म से दूर हो गए।

हमारा असली नाम आर्य है। हम मनु, राम, कृष्ण, कपिल, कणाद और गौतम की सन्तान हैं। हमारे ये सभी पूर्वज धर्म का पालन करते थे। उन्होंने अपना सारा जीवन दूसरों की भलाई में लगा दिया। वे बड़े विद्वान और महापुरूष थे। ये सब आर्य थे, किसी के नाम के आगे हिन्दू, मुसलमान, सिख्ख, जैन, पारसी आदि नहीं लिखा था, वे मन–वचन–कर्म से सच्चे आर्य थे।

मुगल साम्राज्य और अंग्रेजों का राज्य हो जाने पर हम अपने असली नाम को भूल गये। अपने धर्म–कर्म को छोड़ बैठे। नई रूढ़ी के दास बन गये। हमें अपनी सभ्यता से प्यार न रहा, प्रभु की कृपा से इस देश में स्वामी दयानन्द महाराज का जन्म हुआ, जिन्होंने फिर हमारा नाम आर्य बताया। हमें वैदिक ध र्म और सभ्यता का ज्ञान कराया।

ओ3म् हमारा देव है, वेद हमारा धर्म।
आर्य हमारा नाम है, सत्य हमारा कर्म।।

हमारा सबसे बड़ा ग्रंथ

हमारा सबसे बड़ा ग्रंथ वेद है। वेद का अर्थ है ज्ञान। संसार का सारा ज्ञान वेद में है। मनु महाराज ने तो यहां तक कहा है–

"वेदोऽखिलो धर्ममूलम्।"

अर्थात्, सभी धर्मों का आधार वेद है।

परमात्मा ने सृष्टि के शुरू में वेदों का ज्ञान दिया, जिससे सब लोगों की भलाई हो।

वेद चार हैं – ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद।

वेद चार ऋषियों द्वारा प्रकट हुए। इनके नाम हैं – अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा। अग्नि से ऋग्वेद, वायु से यजुर्वेद, आदित्य से सामवेद और अंगिरा से अथर्ववेद।

वेदों में कुल 19925 मन्त्र हैं। ऋग्वेद में 10402, यजुर्वेद में 1974, सामवेद में 1549 और अथर्ववेद में 6000 मन्त्र हैं।

वेदों में सब सत्य विद्याओं का वर्णन है। यूरोप, अमेरिका, फ्रांस, रूस, जर्मनी आदि अनेक देशों ने भी वेद पढ़कर उन्नति की। इसलिए आर्य समाज का तीसरा नियम है –

"वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना–सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।"

एक समय ऐसा आया कि भारत में वेदों का ज्ञान और प्रचार तो क्या होता, वेद–ग्रंथ ही इस देश में दुर्लभ हो गये। स्वामी दयानन्द जी ही एक ऐसे देशभक्त हुए, जिन्होंने जर्मनी से वेद मंगवाकर इस देश के कौने–कौने में वेद का प्रचार किया और लोगों को ज्ञान का सन्देश देकर जगाया।

हम सबको वेद पढ़कर सच्चा ज्ञान प्राप्त करना चाहिए।

www.thearyasamaj.org

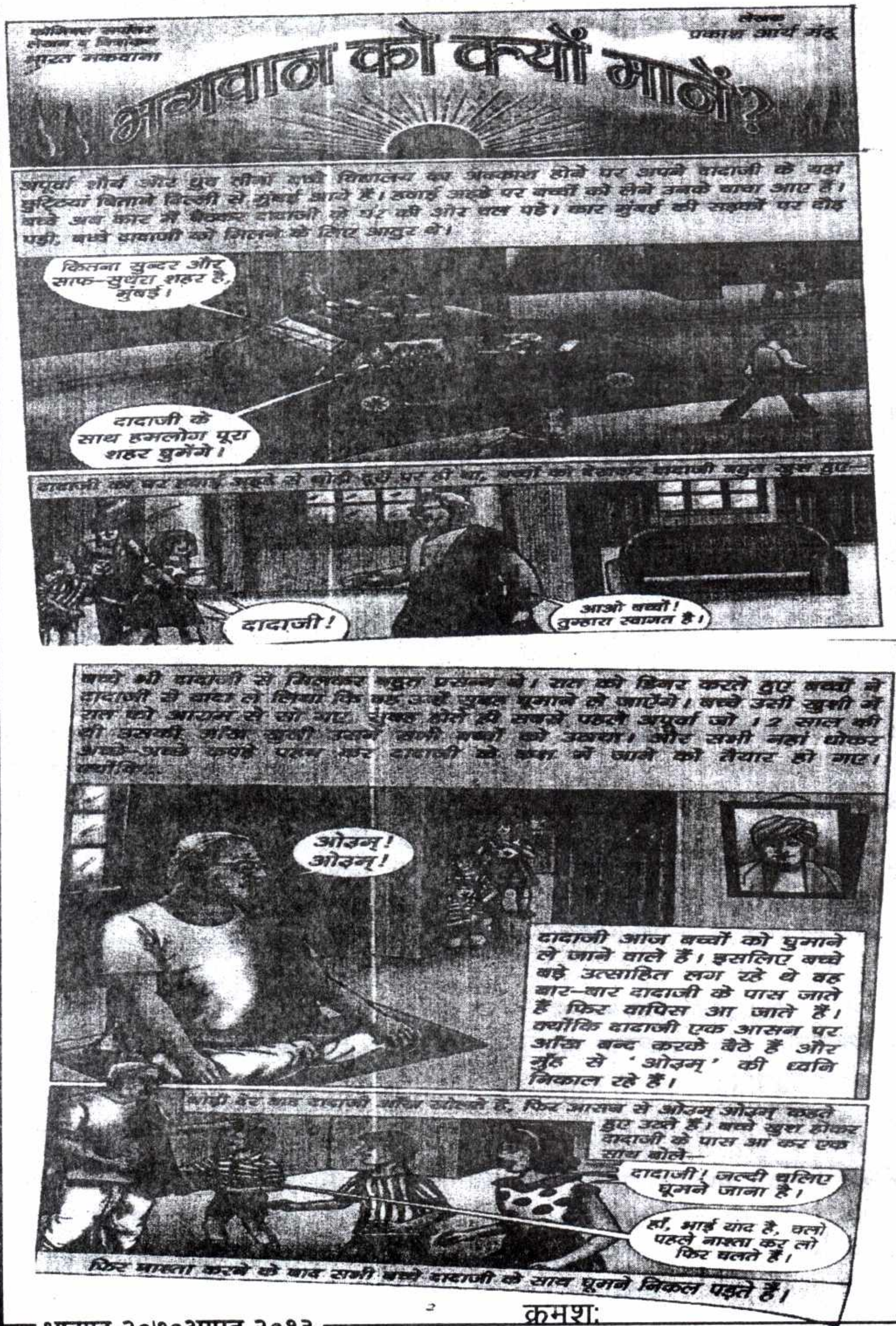

क्रमश:

www.thearyasamaj.org

वैदिक रवि मासिक पत्रिका हेतु नए सदस्यों की सूची :

1. श्री राधेश्याम जी बियाणी, महू
2. श्री अश्विनीजी शर्मा, महू
3. प्राचार्य : आदर्श मॉण्टेसरी स्कूल, महू
4. श्री शान्तिप्रकाशजी जौहरी, महू
5. श्री विजय पाटीदार, महू
6. श्री राजेश रमेशचन्द्र पाटीदार
7. प्राचार्य : सर नोबल हायर सेकण्डरी स्कूल, महू
8. श्री विश्वनाथ महतो, कोदरिया
9. कु. निधि शर्मा
10. डॉ. चन्द्रप्रकाश निगम, महूगांव
11. श्री गणेश सिंह, गुजरखेड़ा, मंहू
12. श्री चैनसिंह आर्य, इन्दौर
13. श्री उचित कुमार, इन्दौर
14. श्री देवनारायण सोनी, इन्दौर
15. डॉ. विनोद अहलुवालिया, इन्दौर
16. श्री रवि लक्ष्मीनारायण पाटीदार आर्य, मौलाना
17. श्री प्रेमनारायण रामेश्वरजी पटेल, देवास
18. श्री जीवनसिंग बाबूलालजी पाटीदार, सिहोर
19. श्री अशोक हुकमसिंह पाटीदार, शाजापुर
20. श्री सन्तोष कैलाशचन्द्र पाटीदार, इन्दौर
21. श्री शैलेन्द्र आर एस चौधरी, इन्दौर
22. श्री मुरारीलालजी पांचाल, महू
23. श्री तेजसिंहजी, कोदरिया, महू
24. श्री द्रोणाचार्यजी दुबे, कोदरिया,
25. श्री रोहित गौड, महू
26. श्री एच. एस. शर्मा, महू
27. श्री धीरप्रिय आर्य, इन्दौर
28. श्री विजय मालवीय, इन्दौर
29. श्री मनीष वाधवा, इन्दौर
30. श्री विजय गोयल, इन्दौर
31. श्री दिनेश गुप्ता, इन्दौर
32. श्री मुकेश गोपलानी, इन्दौर
33. श्री रमेशचन्द्र मांगीलाल पाटीदार, मौलाना
34. श्री एस. के. शर्मा, गुना
35. श्री प्रणव प्रताप तोमर, गुना
36. श्री प्रशान्तजी यादव (MPEB वाले), गुना
37. श्री नरेन्द्रजी द्विवेदी, गुना
38. डॉ. निर्मल जी, गुना
39. श्री श्रवण कुमार दिनेश कुमार यादव, गुना
40. चन्द्रमोहन जी सोनी, गुना
41. विनय शास्त्री, गुना
42. कमलेश ओझा, गुना
43. कमलसिंह सिकरवार, गुना
44. अशोक जी गोयल, गुना
45. अशोकजी अरोरा, गुना
46. प्रमोद कुमार सोनी, गुना
47. श्री ओ. पी सलूजा, गुना
48. श्री संत सिंगाजी कलेक्शन, सनावद
49. श्री लक्ष्मी कृषि सेवा केन्द्र, सनावद
50. श्री त्रिलोकचन्द्र पाटिल, सनावद
51. श्री गुर्जर एग्रो एजेन्सी, सनावद
52. श्री आशीर्वाद पतंजलि, सनावद
53. श्री विमल धन्नालालजी चौधरी, सनावद
54. श्री मॉ रेवा मशीनरी, सनावद
55. श्री विष्णु ट्रेडर्स, सनावद
56. श्री शैलेन्द्र ठाकुर, सनावद
57. श्री शान्तिलाल जायसवाल

क्रमशः...............

आप सभी पाठकगण से निवेदन है कि ज्ञान वर्धक इस पत्रिका को अधिक व्यक्तियों तक पहुंचाने के लिए सदस्य बनावें।

www.thearyasamaj.org

संभागीय सम्मेलन

उज्जैन संभाग की आर्य समाज के समस्त कार्यकर्ताओं का संभागीय सम्मेलन दिनांक 14 सितम्बर 2013 को आर्य समाज मन्दिर उज्जैन में आयोजित किया गया है। इस बैठक में प्रत्येक समाज से अधिकतम 3 सदस्य उपस्थित हो सकेगें। मन्त्री, प्रधान, कोषाध्यक्ष उपस्थित रहे तो उत्तम है अन्यथा 3 कोई भी सदस्य उपस्थित रहें। सभी सदस्यों की भोजन व आवास व्यवस्था आर्य समाज उज्जैन की ओर से की गई है।

भवदीय

लक्ष्मीनारायण आर्य
उपप्रधान
उज्जैन संभाग

दरबारसिंह
उपमन्त्री
उज्जैन संभाग

श्री राजेन्द्र जी व्यास के अमृत महोत्सव पर भव्य आयोजन सम्पन्न

सभा के पूर्व मन्त्री तथा वर्तमान प्रचार समिति के संयोजक श्री राजेन्द्रजी व्यास का 75 वॉ जन्मोत्सव का आयोजन एक ऐतिहासिक यादगार के रूप में अपनी स्मृतियॉ उपस्थित जन के बीच में छोड़ गया। श्री राजेन्द्रजी व्यास का 75 वॉ जन्मोत्सव शर्मा परिसर उज्जैन में विशाल सुसज्जित हॉल में आयोजित किया गया। जिसमें लगभग 1500 से 2000 व्यक्तियों की उपस्थिति थी। इस अवसर पर उज्जैन नगर के अनेक साहित्यकार, शिक्षा विभाग के उच्च अधिकारी, कुलपति, व्याख्याता, कवि, लेखक, साहित्यकार और सामाजिक, सांस्कृतिक और प्रतिष्ठित राजनेता उपस्थित थे। इस अवसर पर म. प्र. शासन के मन्त्री श्री पारस जैन (खाद्य आपूर्ति मन्त्री) तथा श्री यादव (परिवहन मन्त्री), डॉ. रूपकिशोर शास्त्री एवं सार्वदेशिक एवं म. भा. आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री प्रकाश आर्य उपस्थित थे। कार्यक्रम में श्री व्यास के जीवन पर बनी एक डाक्यूमेन्टी फिल्म उनकी उपलब्धियों एवं जीवन के प्रमुख कार्यों का उल्लेख करते हुए बनायी थी जो अत्यन्त आकर्षक थी। कार्यक्रम लगभग 4 घन्टे चला। नगर के प्रतिष्ठित सैकड़ों व्यक्तियों ने श्री व्यास का अभिनन्दन किया। श्री व्यास के परिवार की ओर से आगन्तुकों को स्मृति चिन्ह भेंटकर सहभोज का आयोजन किया।

इस अवसर पर प्रान्तीय सभा के अन्तर्गत स्थित आर्य समाजों के पदाधिकारी और आर्य जन उपस्थित थे। कुल मिलाकर कार्यक्रम अत्यन्त प्रभावी और प्रेरणास्पद रहा।

www.thearyasamaj.org

सभा की ओर से आर्य वीर दल और प्रचार कार्य का प्रारंभ

आर्य वीर दल को सशक्त तथा प्रत्येक आर्य समाज तक पहुंचाने के लिए सभा की ओर से तीन व्यायाम शिक्षकों की नियुक्ति कर दी गई है तथा स्वामी देवव्रतजी के सानिध्य में वे बौद्धिक प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं।

इस हेतु अपने आर्य समाज में इन व्यायाम शिक्षकों को आप भी आमन्त्रित करके आर्य वीर दल के कार्य को गति प्रदान कर सकते है।

समिति की ओर से आगामी कुछ माह में ही प्रत्येक संभाग की दृष्टि से कुछ और प्रशिक्षक नियुक्त किये जाएगें।

प्रचार – प्रचार कार्य हेतु सभा और वेद प्रचार समिति में कार्यरत श्री कमलकिशोर भजनोपदेशक, श्री संजय आर्य, सुरेश आर्य, विनोद आर्य, श्री रामलाल शास्त्री, सुरेश शास्त्री तो प्रचार कर ही रहे है साथ ही श्री प्रभामित्र जी के द्वारा सिहोर व आसपास के आर्य समाज के लिए तथा श्री धर्मदेव शास्त्री उ. प्र. द्वारा कुरवई क्षेत्र में धर्मप्रचार अगस्त व सितम्बर माह में किया जाएगा।

उपरोक्त विद्वानों के अतिरिक्त डॉ. रामपाल, जयपुर, डॉ. अखिलेश शर्मा, लातूर, श्री अमरसिंह आर्य भजनोपदेशक, आचार्य सभा मित्र, आचार्य विनय शास्त्री स्वामी अमृतानन्दजी का भी सहयोग सभा में प्रचार–प्रसार हेतु उपलब्ध रहेगा।

स्वामी देवव्रतजी प्रधान संचालक सार्व. आर्यवीर दल द्वारा आर्य समाज के प्रमुख लोगों को आध्यात्मिक व सैद्धान्तिक प्रशिक्षण हेतु कक्षा लगायी गई। भोपाल संभाग में आर्य समाज महावीर नगर, 14–15 अगस्त रतलाम संभाग की आर्य समाज रतलाम में 16 से 18 और 19, 20, 21 को आर्य समाज उज्जैन में व्यवस्था की गई है। अन्य संभागों के लिए स्वामी जी पुनः समय देगें। इस पूरे समय के लिए नवनियुक्त आर्य वीर दल के व्यायाम शिक्षक भी स्वामी जी के साथ रहेगें।

सन्यासी, वानप्रस्थी व विद्वानों से निवेदन –

समस्त सन्यासी व वानप्रस्थ वृन्द तथा विद्वान व आर्य समाज के समर्पित कार्यकर्ताओं के लिए जो धर्म प्रचार के लिए अपना समय देना चाहते हैं उनके आवास की व्यवस्था सभा की ओर से बहुत ही सम्मान व अपने कर्तव्य निर्वाह की दृष्टि से किया जा रहा है। इस सन्दर्भ में प्रत्येक आर्य समाज को भी लिखा है। आपसे निवेदन है कि अपने नाम व संक्षिप्त परिचय, पता, दूरभाष आदि की जानकारी निम्न पते पर प्रेषित करें। वानप्रस्थ आश्रम को यथाशीघ्र प्रारम्भ किया जा रहा है, इसलिए कृपया आप इसमें सहयोग करें।

पुनः विद्वानों, सन्यासियों और वानप्रस्थियों तथा समर्पित कार्यकर्ताओं की व्यवस्था करना सभा का नैतिक कर्तव्य है। कृपया इसमें सहयोग करें।

प्रकाश आर्य सभा मंत्री आर्य समाज महू,इंदौर

www.thearyasamaj.org

उच्च न्यायालय खण्डपीठ ग्वालियर द्वारा आर्य समाजों में सम्पन्न करवाये जाने वाले विवाह पर लगी शर्तों वाला आदेश स्थगित।

मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय खण्डपीठ ग्वालियर के द्वारा रिट याचिका क्रमांक 3110/2013 में आदेश पारित कर आर्य समाज मन्दिर में होने वाले विवाहों में अनेक शर्तों के साथ यह भी शर्त लगायी थी कि विवाह के पूर्व वर–वधू के माता पिता की स्वीकृति, पांच मित्र, रिश्तेदार की उपस्थिति आवश्यक है और प्रत्येक विवाह की जानकारी पुलिस अधिकारी को देना आवश्यक है।

उपरोक्त आदेश के कारण आर्य समाज मन्दिर में होने वाले विवाहों की संख्या नगण्य सी हो गयी थी तथा अन्य संस्थाएं इसका लाभ उठाकर संस्कार करवा रही थीं।

उक्त आदेश से होने वाले प्रभावों को रोकने के लिये मध्य भारत आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से मंत्री प्रकाश आर्य के द्वारा मध्य भारत आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिवक्ता श्री ऋषि तिवारी आर्य के मार्फत दो जजों की खण्डपीठ के समक्ष उक्त आदेश एवं आरोपित शर्तों को चुनौती देते हुये एक अपील क्रमांक 268/13 प्रस्तुत की गयी थी जिसमें उक्त आदेश के प्रभाव के स्थगन पर सुना जाकर माननीय उच्च न्यायालय खण्डपीठ ग्वालियर के द्वारा अधिवक्ता श्री ऋषि तिवारी (आर्य) के तर्कों को सुनकर एकल पीठ के द्वारा पारित किये गये आदेश से सर्वत्र हर्ष व्याप्त है। आदेश दिनांक 05/08/2013 से स्थगित कर दिया गया एवं अपील सुनवाई हेतु ग्राहय कर ली है।

मुस्लिम परिवार में जन्मी बच्ची को हिन्दू माता–पिता का संरक्षण आदेश

महू निवासी श्रीमती सरला पाल एवं अनिल पाल के घर के पास मो. जाकिर एवं उनकी पत्नी फातिमा बी निवास करती थी। उनके द्वारा वर्ष 2001 में, अपने पारिवारिक सम्बंधों के चलते अपनी 7 माह की पुत्री निःसंतान दम्पत्ति श्रीमती सरला पाल एवं अनिल पाल को दे दी गई। हिन्दु दम्पत्ति के द्वारा बच्ची का नाम स्वाती पाल रख उसे अच्छे अंग्रेजी माध्यम स्कूल में पढ़ाया एवं पूरे परिवार के द्वारा उसको गत 13 वर्षों से पुत्री के समान पाला जा रहा है। वर्ष 2011 में जाकिर के द्वारा प्रकट करा गया कि वे चाहते है कि स्वाती उर्दू भाषा सीखें, इस पर पाल दम्पत्ति के द्वारा मो. जाकिर के घर पर स्वाती को 8 दिनों के लिये उर्दू सीखने भेजा गया। वहाँ पर मो. जाकिर एवं फातिमा बी के द्वारा स्वाती के साथ खान–पान एवं अन्य रहने की आदतों को लेकर मारपीट करी गई जिससे स्वाती अत्यधिक डर गई एवं उसने उनके घर जाने से मना कर दिया। इस बात को लेकर मो. जाकिर एवं फातिमा के द्वारा पाल दम्पत्ति से स्वाती को वापस मांगा जाने लगा साम्प्रदायिक वातावरण बनाना प्रारंभ कर दिया। पुलिस के द्वारा साम्प्रदायिक तनाव के मद्देनजर ऐहतियात बरतते हुये पाल दम्पत्ति को स्वाती को मो. जाकिर एवं फातिमा बी को सौंपने का कहा गया। ऐसी स्थिति में अपनी पुत्री का कष्ट देखते हुये पाल दम्पत्ति के द्वारा आर्य समाज से सम्पर्क किया, उनका सहयोग कर। जिनके द्वारा उपरोक्त वर्णित तथ्यों के आधार पर माननीय उच्च न्यायालय खण्डपीठ इंदौर के समक्ष रिट याचिका प्रस्तुत कर स्वाती का संरक्षण पाल दम्पत्ति के पास ही रखें जाने हेतु एवं पुलिस संरक्षण दिलवाये जाने हेतु मध्यप्रदेश शासन एवं अन्य के विरूद्ध याचिका प्रस्तुत की, जिस पर दिनांक 19.08.2013 को माननीय उच्च न्यायालय के द्वारा सुनवाई करी गई। एडव्होकेट ऋषि तिवारी (आर्य) के द्वारा प्रस्तुत याचिका पर विचार कर माननीय उच्च न्यायालय ने स्वाती से उसकी राय जानी। इस पर माननीय उच्च न्यायालय ने याचिका में आगामी आदेश तक पुलिस एवं मध्यपदेश शासन को आदेशित किया है कि वह स्वाती के पाल दम्पत्ति के संरक्षण में होने के सम्बंध में उनके विरूद्ध किसी प्रकार की कार्यवाही ना करें एवं यह भी आदेशित किया कि स्वाती, पाल दम्पत्ति के संरक्षण में ही रहेगी। इस प्रयास की नगर में सर्वत्र प्रशंसा की जा रही है।

www.thearyasamaj.org

सूचना

7 वॉ अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

भारत के बाहर विदेशों में होने जा रहे अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की श्रृंखला में 7 वां अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दक्षिण अफ्रिका में दिनांक 28, 29 एवं 30 नवम्बर 2013 को सम्पन्न होने जा रहा है। सम्मेलन में भाग लेने वाले इच्छुक व्यक्ति सूचित करें।

इच्छुक व्यक्ति अपने नाम भेजने हेतु व विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क करें –

श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल
उपप्रधान : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली मोबा. 09824072509

श्री विनय आर्य
उपमन्त्री : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली मोबा. 09958174441

भवदीय :
प्रकाश आर्य
मन्त्री : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली
मोबा. 9826655117

अन्तरंग बैठक

प्रधानजी के आदेशानुसार म. भा. आर्य प्रतिनिधि सभा की आगामी बैठक दिनांक 15 सितम्बर 2013 को आर्य समाज उज्जैन में आयोजित की गई है। सभी पदाधिकारी, आमन्त्रित सदस्य, प्रतिष्ठित सदस्य अन्तरंग में पहुंचे। जिसमें कई महत्वपूर्ण विषयों पर विंचार–विमर्श कर निर्णय लिया जाएगा। आपकी उपस्थिति आवश्यक एवं प्रार्थनीय है।

भवदीय
प्रकाश आर्य
मन्त्री : मध्यभारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल

इन्दौर जिले के ग्रामीण अंचल में प्रचार

श्री रामलालजी शास्त्री, सुरेशजी शास्त्री, संजय आर्य, विनोद आर्य, सुरेश आर्य द्वारा ग्राम पिगडम्बर, बोरखेड़ी, कमलानगर, सांतेर, कोदरिया, मालवीय नगर, हरसोला, में श्री ओमप्रकाश आय के संयोजन में वेद प्रचार हुआ।

www.thearyasamaj.org

सामाजिक उन्नति के साधन
संगठन सूक्त

ओं सं समिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ ।
इळस्पदे समिध्यसे स नो वसून्या भर ।। १।।

अर्थ - हे प्रभो ! तुम शक्तिशाली हो बनाते सृष्टि को।
वेद सब गाते तुम्हें है कीजिए धन वृष्टि को ।

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।
देवा भागं यथा पूर्वे सं जानाना उपासते ।। २।।

अर्थ - प्रेम से मिलकर चलो बोलो सभी ज्ञानी बनो,
पूर्वजों की भाँति तुम कर्तव्य के मानी बनो ।

समानो मंत्रः समितिः समानी-समानं मनः सह चित्तमेषाम्
समानं मंत्रमभि मंत्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि ।। ३।।

अर्थ - हों विचार समान सबके चित्त मन सब एक हो ।
ज्ञान देता हूँ बराबर भोग्य पा सब नेक हो ।

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः ।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सु सुहासति ।। ४।।

अर्थ - हो सभी के दिल तथा संकल्प अविरोधी सदा,
मन भरे हो प्रेम से जिससे बढ़े सुख सम्पदा ।

महामृत्युञ्जय मन्त्र :

ओ३म् त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्यो र्मुक्षीय मामृतात् ।।

शांतिमंत्र

ओं द्यौः शान्तिरन्तरिक्षँ शान्तिः पृथिवी शन्तिराप: शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वँ शान्ति शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ।।

www.thearyasamaj.org

एम.पी.एच.आई.एन. 2003 12367

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2012-14

वैदिक रवि के उद्देश्य व नियम

1. वैदिक रवि मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का आमुख पात्र है। 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' इसका प्रमुख उद्देश्य है।
2. यह पत्रिका माह की 27 तारीख को प्रकाशित होती है।
3. आगामी माह की 05 तारीख तक पत्रिका यदि पाठकों तक न पहुंचे तो डाक विभाग द्वारा या कार्यालय से पत्रिका के संबंध में जानकारी प्राप्त करें।
4. पत्रिका का मूल्य 20 रुपये प्रत्येक प्रति, वार्षिक सदस्यता शुल्क 200 रु. एवं आजीवन सदस्यता शुल्क 1000 रु है। आजीवन सदस्यता का तात्पर्य 15 वर्ष की अवधि तक के लिए सदस्यता से है।
5. सदस्यता शुल्क के ड्राफ्ट, चेक, मनीआर्डर आदि 'मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम भोपाल में देय होने चाहिए।
6. पत्रिका में छपवाने हेतु भेजे गये लेख, कवितायें आदि माह की 10 तारीख तक कार्यालय में पहुंच जाने चाहिए उसके बाद प्राप्त होने वाले लेख पत्रिका के विचारार्थ होंगे। विशेष पर्व हेतु भेजे लेख एक माह पूर्व भेजने का कष्ट करें। पत्रिका हेतु भेजे गये लेख साफ एवं स्वच्छ लिपि में कागज पर एक ही ओर लिखे हों यदि टंकित लेख हों तो ज्यादा अच्छा होगा।
7. पत्रिका में आर्य समाज तथा उसकी विचारधारा से संबंधित समाचार, सामाजिक, आध्यात्मिक, राष्ट्रीय हित के लेख, समालोचनात्मक निबंध आदि विषयों की सामग्री ही प्रकाशित की जाती है। चमत्कार, पाखण्ड युक्त लेख सामग्री स्वीकार्य नहीं होती।
8. पत्रिका हेतु भेजे गए लेख आदि को संपादित कर लघुकृत करने, छापने अथवा न छापने के सर्वाधिकार संपादक के है इस संबध में कोई पत्राचार स्वीकार नहीं होगा।
9. पत्रिका में छपे लेखों के लेखकों को उनके दिये हुए पते पर पत्रिका का वह अंक जिसमें लेख छपा है निःशुल्क भेजा जाता है। अप्राप्त होने पर वैदिक रवि कार्यालय या डाक विभाग से सम्पर्क करें।
10. पत्रिका की गुणवत्ता में सुधार एवं विकास हेतु आपके सुझाव सदैव आमंत्रित हैं।

प्रधान संपादक
वैदिक रवि
मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा
टी.टी. नगर, भोपाल (म.प्र.) 462003

मुद्रक, प्रकाशक, इन्द्र प्रकाश गांधी द्वारा कौशल आफसेट प्रेस, तलैया से मुद्रित कराकर मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय, तात्या टोपे नगर, भोपाल से प्रकाशित। संपादक प्रकाश आर्य

प्रति,

अवितरित रहने पर कृपया निम्न पते पर लौटायें
मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा
तात्या टोपे नगर, भोपाल 462003 (म.प्र.)